कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी [illegible] जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) | | | | | | | |

(In Words) ....

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में ....

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☑ अंग्रेजी ☐

विषय .... अर्थशास्त्र (Economics)

परीक्षा का दिन ....

दिनांक ....

> नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश – (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जाएगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ 15 1/4 को 16, 17 1/2 को 18, 19 3/4 को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षक नामांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका [illegible] 58 जीएसएम [illegible] उपयोग में लिया गया है। 164/2018

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाइन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जायेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - अ

1. अर्थशास्त्र में व्यष्टि व समष्टि शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग रेगनर फ्रिश ने 1933 में किया।

2. सामाजिक लागतें :- → ऐसी लागतें जिन्हें उत्पादन के दौरान समाज प्रत्यक्ष रूप से वहन करता है, सामाजिक लागतें कहलाती है। जैसे - उत्पादन के दौरान कारखानों से उत्पन्न धुआँ, धूल, प्रवाहित कचरा आदि।

3. उत्पादन फलन, उत्पादन के साधनों व उत्पादन की मात्रा के मध्य संबंध दर्शाता है।

4. पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में क्रेताओं व विक्रेताओं की संख्या अधिक होती है।

5. मध्यवर्ती वस्तुएँ - धागा (कपड़े के निर्माण में सहायक),
लोहा (टेबल, मशीनों के निर्माण में सहायक)

6. मुद्रा :- → ऐसा साधन जिसे बिना किसी विशेष जाँच - पड़ताल के सभी स्थानों पर सर्वमान्य विनिमय का माध्यम स्वीकारा जाए, मुद्रा कहलाती है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

7. अधिविकर्ष :- किसी भी ग्राहक द्वारा अपने बैंक खाते में जमा धन से अधिक धन निकलवाना, बैंक अधिविकर्ष कहलाता है।

8. $MPC = \frac{\Delta C}{\Delta Y}$

जहाँ ΔY = आय में परिवर्तन
ΔC = उपभोग में परिवर्तन

9. समग्र मांग :- किसी देश की अर्थव्यवस्था में एक वर्ष की समयावधि में उपभोक्ता वर्ग द्वारा उपभोग हेतु की गई संपूर्ण मांग व उत्पादक वर्ग द्वारा विनिवेश हेतु की गई मांग का योग, समग्र मांग कहलाती है।

खुली अर्थव्यवस्था में, $AD = C + I + G + (X - M)$

बंद अर्थव्यवस्था में, $AD = C + I$

10. खुली अर्थव्यवस्था :- किसी देश की वह अर्थव्यवस्था जिसमें देश अन्य देशों से आयात - निर्यात करता है अर्थात देश की भौगोलिक सीमाओं के पार भी व्यापार किया जाए, खुली अर्थव्यवस्था कहलाती है।

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - ब

11. **उपयोगिता :-**

→ उपयोगिता एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है जिसका आशय किसी वस्तु की आवश्यकता संतुष्ट करने की शक्ति से है। इसे मापने के दृष्टिकोण पर अनेक अर्थशास्त्रियों के अनेक मत हैं परंतु मार्शल व पीगू के अनुसार इसे यूटिल्स में मापा जा सकता है।
जैसे - यदि एक केले के उपभोग से हमें 10 संतुष्टि मिले तो यह कहा जाएगा कि केले की उपयोगिता 10 Units है।
हिक्स व ऐलन के अनुसार उपयोगिता क्रमवाचक है।

12. **प्रतिस्थापन प्रभाव :-**

→ यदि कोई एक वस्तु दूसरी वस्तु की तुलना में सापेक्षतया सस्ती हो जाती है तो वह पहली वस्तु, दूसरी वस्तु (जो महंगी है) को प्रतिस्थापित कर देती है जिसे प्रतिस्थापन प्रभाव कहते हैं।
जैसे :- वस्तु X की कीमत Y की तुलना में कम हो गई तो वस्तु X, वस्तु Y को प्रतिस्थापित कर देगी अर्थात् वस्तु X की मांग बढ़ जायेगी।

13.

स्टॉक	प्रवाह
1. किसी एक निश्चित समय बिंदु पर की जाने वाली आर्थिक माप स्टॉक कहलाती है।	1. किसी एक निश्चित समयावधि में की जाने वाली चरों की आर्थिक माप, प्रवाह कहलाती है।
2. राष्ट्रीय आय स्टॉक नहीं है।	2. राष्ट्रीय आय प्रवाह है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

14. राष्ट्रीय आय की दो विशेषताएँ :-

1. राष्ट्रीय आय का संबंध एक निश्चित समयावधि से होता है जो कि सामान्यतः 1 वर्ष की होती है (1 अप्रैल - 31 मार्च)

2. राष्ट्रीय आय की गणना में तीनों क्षेत्रकों (प्राथमिक, द्वितीयक, तृतीयक) में उत्पादित अंतिम वस्तुओं व सेवाओं के मूल्य को शामिल किया जाता है।

15.

सकल घरेलू उत्पाद	सकल राष्ट्रीय उत्पाद
1. किसी देश की भौगोलिक सीमा के भीतर देश के निवासियों व गैर-निवासियों (विदेशी) द्वारा उत्पादित अंतिम माल व सेवा का योग।	किसी देश की भौगोलिक सीमा में देश के निवासियों अन्य देशों की सीमाओं में भी अपने देश के निवासियों द्वारा उत्पादित अंतिम माल व सेवाओं का योग।
2. $GDP = C + I + G + (X - M)$	$GNP = C + I + G + (X - M) + NFIA$

16. मुद्रा पूर्ति की अवधारणाएँ :-

M_1 अवधारणा :-

$$M_1 = C + DD + OD$$

जहाँ C = करेंसी (नोट)

DD = लोगों द्वारा जमा करवाई गई मांग जमाएँ

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

OD = रिजर्व बैंकों के पास अन्य जमाएँ

इस अवधारणा में देश की कुल करेंसी में लोगों द्वारा बैंकों में जमा करवाई गई माँग जमाएँ और रिजर्व बैंकों के पास रखी हुई अन्य जमाएँ शामिल की जाती है।

M_3 अवधारणा :-

M_3 = M_1 + व्यावसायिक बैंकों में निवल आवधिक जमाएँ

जहाँ $M_1 = C + DD + OD$ है।

17. बजट के दो उद्देश्य :-

1. उत्पादन वृद्धि में सहायक :- बजट प्रावधानों में करारोपण में दी गई राहत के बाद उत्पादक अधिक उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहित होता है। इसके साथ-साथ लोग भी अपनी अधिक आय खर्च करके कल्याण बढ़ाते हैं।

2. कल्याणकारी राज्य/राष्ट्र की स्थापना :- बजट में कमजोर व असहाय वर्गों हेतु चलाई गई योजनाएँ व अनेक प्रकार के प्रावधानों की वजह से ही देश के सभी लोगों का कल्याण संभव हो पाता है।

P.T.O.

BSER-164/2018

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

18. नकद विहीन लेन-देन के लाभ :-

(i) नकद रखने से छुटकारा :- अनेक अवसरों पर व्यक्ति को अपने पास अधिक धन की आवश्यकता होती है परंतु अधिक धन नकद रूप में रखने पर असुविधा तथा असुरक्षितता महसूस होती है। नकद विहीन लेन-देन के माध्यम से व्यक्ति अपने पास केवल डेबिट या क्रेडिट कार्ड रख सकता है।

(ii) समय व धन की बचत :- नकद विहीन लेन-देन के माध्यम से हर प्रकार की खरीद व बिक्री तथा अन्य लेन-देन आसानी से घर बैठे किये जा सकते हैं जिससे समय व धन दोनों की बचत होती है।

खण्ड-स

19.

अंतर का आधार	व्यष्टि अर्थशास्त्र	समष्टि अर्थशास्त्र
1. अध्ययन की इकाई	किसी एक व्यक्तिगत ईकाई का अध्ययन करना।	देश की संपूर्ण अर्थव्यवस्था का अध्ययन करना।
2. विरोधाभास	व्यष्टि के लिए बचत लाभकारी	समष्टि के लिए बचत अलाभकारी।
3. परिवर्तन	व्यष्टि के परिवर्तन समष्टि की स्थिरता में भी हो सकते हैं।	समष्टि पर व्यष्टि की बनावट का कोई असर नहीं

क द्वारा | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

विश्लेषण के 4. उपकरण	कीमत विश्लेषण	सामान्य आय व रोजगार सिद्धांत का विश्लेषण

20. **तटस्थता वक्र :-** एक ऐसा वक्र जो दो वस्तुओं के उन विभिन्न संयोगों को प्रदर्शित करता है जो एक उपभोक्ता को समान संतुष्टि प्रदान करते हैं।

विशेषताएँ :-

(i) **ढाल ऋणात्मक होना :-** तटस्थता वक्रों का ढाल हमेशा ऋणात्मक होता है क्योंकि एक वस्तु की एक अधिक इकाई प्राप्त करने के लिए दूसरी वस्तु की कुछ मात्रा का त्याग करना पड़ता है।

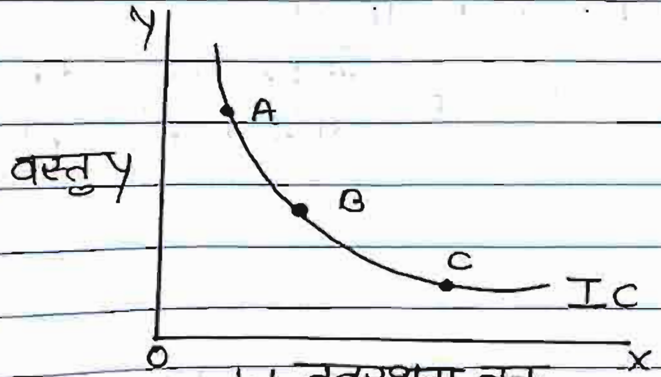

1.1 तटस्थता वक्र

वस्तु X

(ii) **प्रतिस्थापन की सीमांत दर घटती हुई होना :-** (मूल बिंदु के उन्नतोदर) एक वस्तु की उत्तरोत्तर एक इकाई में वृद्धि करने पर दूसरी इकाई को त्यागने की इच्छा घटती रहती है अर्थात् त्याग प्रत्येक स्तर पर घटता रहता है इसलिए यह वक्र मूल बिंदु के उन्नतोदर होता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(iii) वक्रों का परस्पर प्रतिच्छेद न करना :- → दो या अधिक तटस्थता वक्र कभी भी एक दूसरे को प्रतिच्छेद नहीं करते।

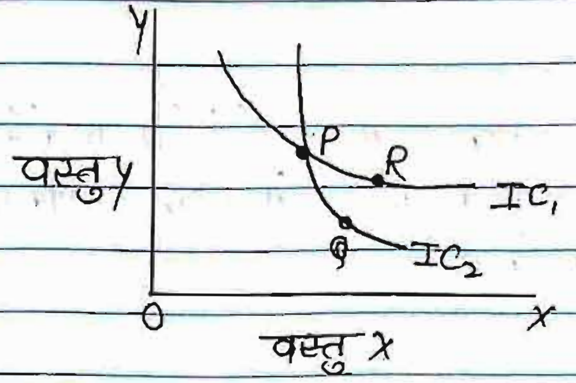

चित्र 1.2 तटस्थता वक्र

चित्र 1.2 में IC_I पर, P = R — (i) (∵ एक ही तटस्थता वक्र के बिंदु)

IC_2 पर, P = Q — (ii)

समी. (i) व (ii) से

R = Q (जो कि एक गलत अवधारणा है क्योंकि R पर दोनों वस्तुओं की मात्रा अधिक है)

21. बाजार मांग :- → एक निश्चित समयावधि में किसी बाजार के सभी उपभोक्ताओं द्वारा विभिन्न कीमतों पर मांगी जाने वाली वस्तु की विभिन्न मात्राएं, बाजार मांग कहलाती है।

सुविधा हेतु यह मान लेते हैं कि एक बाजार में केवल दो ही उपभोक्ता A व B हैं तो -

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

बाजार मांग तालिका :-

कीमत	A की मांग	B की मांग	बाजार मांग (A+B की मांग)
10	100	35	135 (100+35)
20	90	30	120
30	80	25	105
40	70	20	90
50	60	15	75
60	50	10	60

बाजार मांग वक्र :-

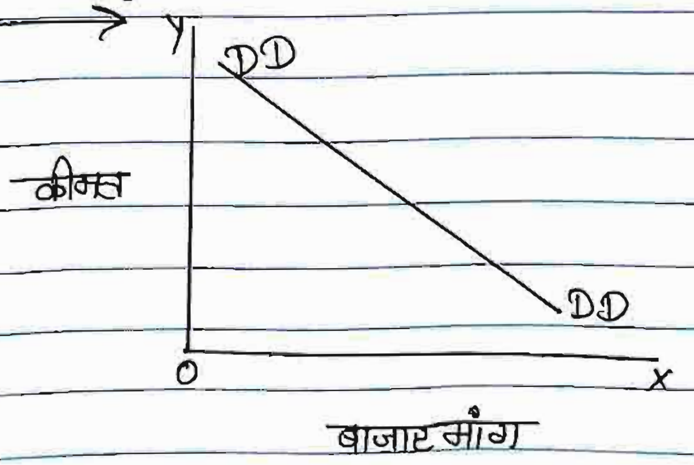

चित्र 1.3 बाजार मांग वक्र

उपर्युक्त तालिका व वक्र से स्पष्ट है कि वस्तु की कीमत में कमी वृद्धि होने पर (10 – 20) उपभोक्ता A द्वारा मांगी जाने वाली मांग घट जाती है (100-90) तथा समान स्थिति उपभोक्ता B के साथ घटित है। एक बाजार के दोनों उपभोक्ता A व B द्वारा की गई मांग के योग को कुल बाजार मांग कहते हैं।
वस्तु की कीमत 10 होने पर उपभोक्ता A की मांग 100 व B की मांग 35 है तो कुल बाजार मांग = 135 (100 + 35) होगी।

22. **औसत उत्पाद :-**

→ उत्पादन के प्रत्येक परिवर्तनशील साधन द्वारा किया गया कुल उत्पादन, औसत उत्पाद (AP) कहलाता है।

$$AP = \frac{TP}{L}$$

जहाँ TP = कुल उत्पाद
L = श्रम की इकाईयाँ

उत्पादन के स्थिर साधनों से प्रारंभ में अच्छा तालमेल होने के कारण यह एक सीमा तक बढ़ता है तथा बाद में गिरने लगता है।

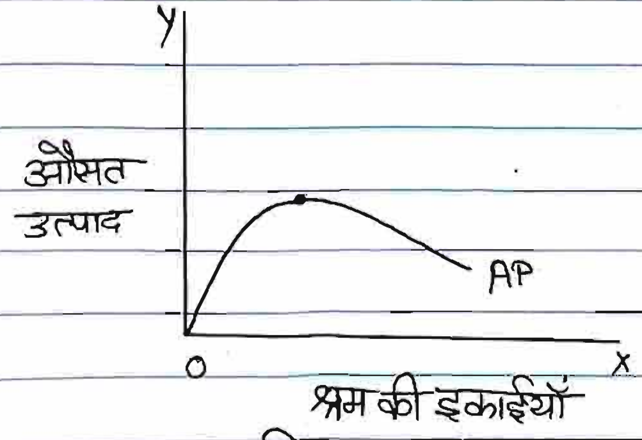

चित्र 1.4 औसत उत्पाद वक्र

सीमांत उत्पाद (MP) :-

→ उत्पादन के परिवर्तनशील साधन की एक इकाई में परिवर्तन करने पर, कुल उत्पादन में होने वाला परिवर्तन, सीमांत उत्पाद कहलाता है।

$$MP = \frac{\Delta TP}{\Delta L}$$

जहाँ ΔL = श्रम की इकाई में परिवर्तन
ΔTP = कुल उत्पाद में परिवर्तन

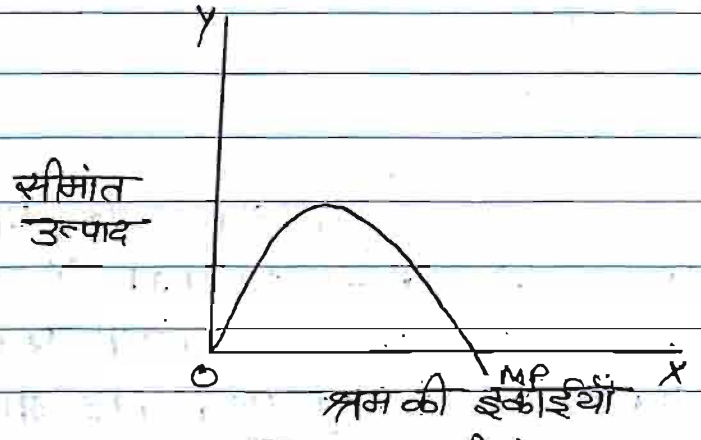

चित्र 1.5 सीमांत उत्पाद वक्र

साधनों (स्थिर व परिवर्तनशील) के सामंजस्य के MP प्रारंभ में बढ़ता है तथा सामंजस्य समाप्त होने के कारण MP घटता है तथा अंततः ऋणात्मक हो जाता है।

23

सकल निवेश	शुद्ध निवेश
1. उत्पादक द्वारा उत्पादन हेतु पुंजीगत वस्तुओं जैसे - मशीन, बांध, संयंत्र, फर्नीचर आदि में किया गया कुल निवेश जिसमें साधनों (मशीन) पर लगे मूल्यह्रास को भी शामिल किया जाए, सकल निवेश कहलाता है।	उत्पादक द्वारा उत्पादन हेतु पुंजीगत वस्तुओं जैसे - मशीन आदि में किया गया निवेश जिसमें साधनों (मशीन) पर लगे मूल्यह्रास को शामिल न किया जाए, शुद्ध निवेश कहलाता है।
2. सकल निवेश = शुद्ध निवेश + मूल्यह्रास	शुद्ध निवेश = सकल निवेश - मूल्यह्रास

मूल्यह्रास :- उत्पादन में काम में ली जाने वाली पुंजीगत वस्तुओं में होने वाली घिसावट को मूल्यह्रास कहा जाता है। मूल्यह्रास एक प्रकार की पुंजीगत हानि होती है जिसके कारण संपत्ति का मूल्य कम हो जाता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

24. एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता की 4 विशेषताएँ :-

(i) फर्मों की संख्या अधिक :- एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता में फर्मों की संख्या अधिक पाई जाती है। इन फर्मों में वस्तु विभेदीकरण होता है। फर्मों के मध्य परस्पर विरोधी प्रवृत्ति होती है। यद्यपि फर्मों का आकार छोटा होता है परंतु कोई भी फर्म अकेले कीमतों का निर्धारण नही कर सकती।

(ii) वस्तु विभेदीकरण :- इस बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता की भांति न तो ऐसी वस्तु का उत्पादन होता जो पूर्ण स्थानापन्न हो तथा न ही ऐसी वस्तु का उत्पादन होता जिसकी कोई स्थानापन्न वस्तु ही न हो बल्कि इस प्रतियोगिता में निकट स्थानापन्न वस्तुओं का उत्पादन होता है।

वस्तु विभेदीकरण निम्न प्रकार से हो सकता है :-

(a) सरकार कुछ फर्मों को लाइसेंस व पेटेंट का अधिकार देती है।

(b) वस्तु की रंग, रूप, मात्रा, गुणवत्ता, पैकिंग में परिवर्तन

(c) विज्ञापन के सहारे परिवर्तन।

(d) खास सुविधाओं में अंतर।

(iii) फर्म - समूह :- इस प्रतियोगिता में सभी फर्में मिलकर उद्योग नही बल्कि समूह कहलाती है क्योंकि उद्योग में सभी वस्तुएँ समान उत्पन्न होती है बल्कि एकाधिकारात्मक प्रतियोगिता में निकट स्थानापन्न वस्तुएँ उत्पादित की जाती है।

(iv) गैर-कीमत प्रतियोगिता :- → इस बाजार में विज्ञापन, प्रचार-प्रसार आदि का बहुत अधिक महत्व होता है तथा इसी कारण प्रतियोगिता होती है।

25. पूंजी की सीमांत कार्यकुशलता (MEC) :- → प्रोफेसर कुरिहरा के अनुसार "MEC अतिरिक्त पूंजीगत वस्तुओं की भावी आय व पूर्ति कीमत के बीच का अनुपात है"।
पूंजी की सीमांत कार्यकुशलता निवेश से अनुमानित लाभ की दर है जो दो कारकों पर निर्भर है:-
(i) भावी आय
(ii) पूर्ति कीमत

(i) भावी / प्रत्याशित आय :- → पूंजीगत संपत्ति से भविष्य में होने वाले कुल लाभ।

(ii) पूर्ति कीमत :- → पूंजीगत वस्तुओं पर किया गया कुल व्यय।

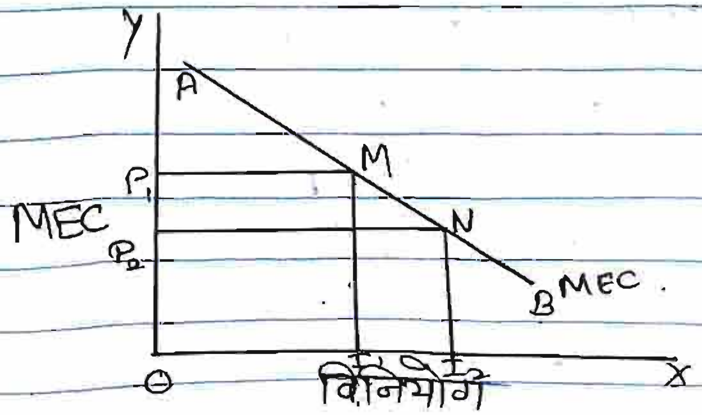

चित्र 1.6 पूंजी की सीमांत कार्यकुशलता वक्र

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

चित्र 1.6 में OX अक्ष पर विनियोग की मात्रा व OY अक्ष पर पूंजी की सीमांत कार्यकुशलता को दर्शाया गया है। इसे देखने पर स्पष्ट है कि विनियोग I_1 होने पर MEC-P_1 है तथा विनियोग I_2 बढ़ने पर, MEC घटकर P_2 हो जाती है जिसके दो कारण हैं:-

(i) विनियोग बढ़ने से पूंजी की मांग भी बढ़ती है जिसके कारण उसकी पूर्ति कीमत बढ़ने पर लाभ कम होता है।

(ii) विनियोग बढ़ने से उत्पादन कम लागत पर किया जाता है जिससे कि कीमत कम होने पर लाभ भी कम होता है।

o निवेश दो कारकों पर निर्भर करता है:-

(i) MEC
(ii) ब्याज दर।

जब तक MEC, ब्याज दर से अधिक होगी उत्पादक निवेश करेगा परंतु विपरित स्थिति होने पर वह उत्पादन बंद कर देगा।

26. MPC = 0.5

K (निवेश गुणक) = ?

$$K = \frac{1}{1-MPC}$$

$$K = \frac{1}{1-0.5}$$

$$K = \frac{1}{0.5}$$

द्वारा अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

K = 2

अतः निवेश गुणक का मान 2 होगा।

27. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की आवश्यकता के कारण :-

(i) साधनों का असमान वितरण :- सभी देशों में सभी प्रकार के प्राकृतिक साधनों - तेल, कोयला, खनिज आदि का असमान वितरण पाया जाता है। जहाँ ये साधन प्रचुर होते हैं वह देश उस साधन से संबंधित उत्पाद आदि का निर्माण करके अन्य देशों को निर्यात करना चाहते हैं तथा प्रत्येक स्थान पर जलवायु व मौसम दशाएँ भी असमान होती हैं।

(ii) किसी वस्तु के उत्पादन में दक्ष होना :- कोई देश किसी वस्तु विशेष के उत्पादन में दक्ष होता है क्योंकि उस वस्तु के लिए उस स्थान की दशाएँ उपयुक्त होती हैं तथा वह देश कम लागत पर उत्पादन कर पाता है तो अन्य देश भी उस वस्तु का आयात करना चाहते हैं।

(iii) घरेलू उद्योगों में प्रतिस्पर्धा :- अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के कारण घरेलू उद्योग भी अधिक मात्रा, अच्छी गुणवत्ता को आधार मानकर तैयार कर पाते हैं।

(iv) राष्ट्रीय आय में योगदान :- वर्तमान में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में वस्तुये

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

के निर्यात के कारण प्राप्त होने वाली विदेशी आय, राष्ट्रीय आय का एक बहुत बड़ा हिस्सा बन गई है।

खण्ड - द

28. परिवर्तनशील अनुपातों का नियम :-
→ यह नियम अल्पकाल में लागू होता है। इस नियम के अनुसार परिवर्तनशील साधनों की उत्तरोत्तर इकाईयाँ बढ़ाने पर एक सीमा के बाद सीमांत उत्पादकता में कमी होने लगती है।

मान्यताएँ :-
→
(i) यह नियम केवल अल्पकाल में लागू होता है।
(ii) तकनीक स्थिर मानी जाती है।
(iii) स्थिर व परिवर्तनशील दोनों प्रकार के साधन पाये जाते हैं।
(iv) परिवर्तनशील साधनों की सभी इकाईयाँ समरूप होती हैं।

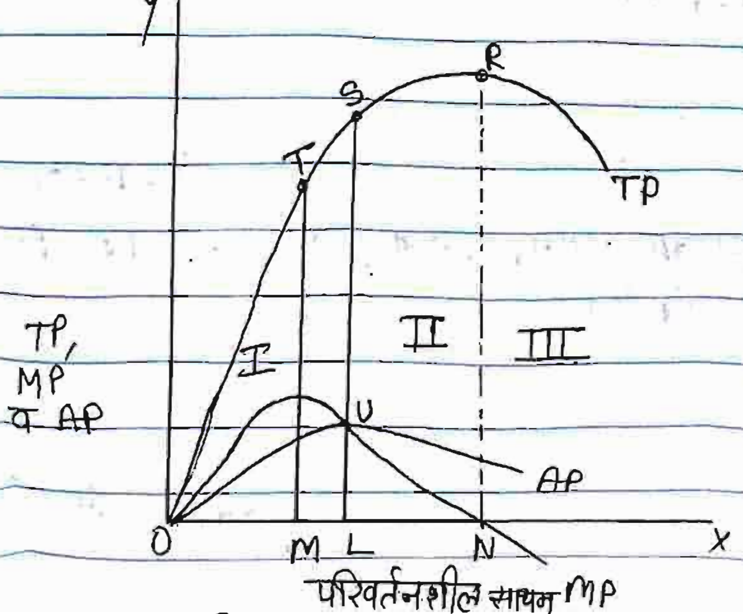

चित्र 1·7

परीक्षार्थी उत्तर

(i) बढ़ते औसत उत्पाद की प्रथम अवस्था :- → रेखाचित्र 1.7 में, OX अक्ष पर परिवर्तनशील साधन की इकाईयों व OY अक्ष पर TP, MP व AP को दर्शाया है। उत्पादन की प्रथम अवस्था में, स्थिर व परिवर्तनशील साधनों के अनुकूलतम सामंजस्य के कारण सीमांत उत्पाद बढ़ता है जिसके कारण कुल उत्पाद भी बढ़ती हुई दर से बढ़ता है तथा साथ ही औसत उत्पाद भी बढ़ता है। यह अवस्था O से M तक उच्चतम उत्पादन की अवस्था है।

(ii) घटते प्रतिफल की अवस्था :- → उत्पादन की यह अवस्था बिंदु L से N तक है जिस स्थिति में औसत उत्पाद व सीमांत उत्पाद दोनों घट रहे हैं क्योंकि स्थिर साधनों का परिवर्तनशील साधनों द्वारा पूर्ण उपयोग कर लिया गया है तथा इनकी अनुकूलता भी इस अवस्था में समाप्त हो गई है। इस स्थिति में TP (कुल उत्पाद) घटती हुई दर से बढ़ता है।

(iii) ऋणात्मक प्रतिफल की अवस्था :- → यह अवस्था N बिंदु के बाद पायी जाती है जहाँ से औसत उत्पाद ऋणात्मक स्थिति में आ जाता है तथा कुल उत्पाद घटने लगता है। इसका कारण है कि स्थिर साधनों पर परिवर्तनशील साधनों का दबाव बहुत अधिक बढ़ जाता है जिसके कारण वे एक दूसरे के लिए बाधक बन जाते हैं। इस अवस्था में उत्पादन करने पर उत्पादक को हानि होती है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

एक उत्पादक उत्पादन की द्वितीय अवस्था तक ही उत्पादन करेगा क्योंकि उसके बाद उसे हानि होगी।

29. बाजार संतुलन :- → बाजार की वह अवस्था जहाँ पर उपभोक्ता व उत्पादक दोनों ही मांग व पूर्ति तथा कीमत के संबंध में संतुष्ट हो अर्थात् एक निश्चित कीमत को निर्धारित कर लें।
बाजार संतुलन के दो पक्ष होते हैं:-
(i) मांग पक्ष
(ii) पूर्ति पक्ष

(i) बाजार मांग पक्ष :- → किसी निश्चित समयावधि में एक बाजार के सभी उपभोक्ताओं द्वारा विभिन्न कीमतों पर वस्तु की मांगी जाने वाली विभिन्न मात्राएँ बाजार मांग कहलाती है। मांग पक्ष के विश्लेषण से यह बात ज्ञात होती है कि वस्तु की सीमांत उपयोगिता ही उसके मूल्य की उच्चतम सीमा है तथा वस्तु की कीमत व मांग में विपरित संबंध पाया जाता है।

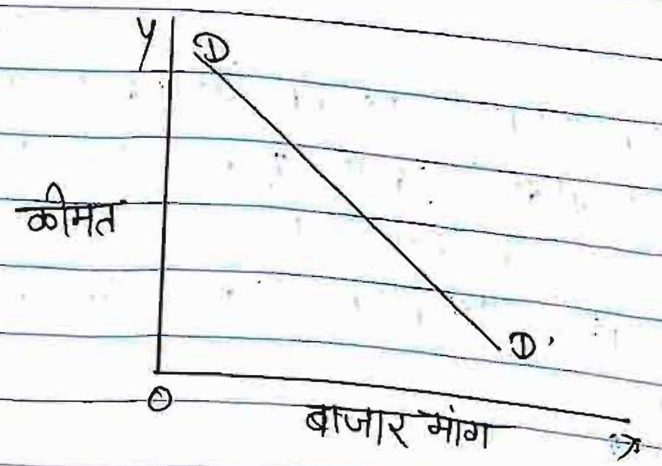

चित्र 1.8 बाजार मांग वक्र

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

रेखाचित्र 1.8 में ox अक्ष पर वस्तु x की मांगी जाने वाली मात्रा व oy अक्ष पर वस्तु की कीमत को दर्शाया है। मांग वक्र का ढाल स्पष्ट करता है कि वस्तु की कीमतें बढ़ने पर मांग में कमी व कीमतें घटने पर मांग में वृद्धि होती है।

(ii) पुर्ति पक्ष :- किसी निश्चित समयावधि में एक बाजार के सभी उत्पादकों द्वारा उत्पादित माल व सेवाएँ जिन्हें वह भिन्न-भिन्न कीमतों पर बेचने हेतु तत्पर रहता है, बाजार पुर्ति कहलाती है। पुर्ति पक्ष के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि वस्तु की सीमांत लागत उसके मूल्य की न्यूनतम सीमा है।

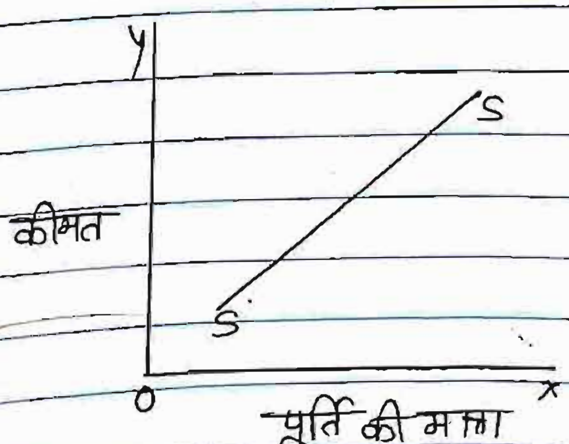

चित्र 1.9 बाजार पुर्ति वक्र

रेखाचित्र 1.9 में ox अक्ष पर वस्तु की पुर्ति मात्रा व oy अक्ष पर वस्तु की कीमत को दर्शाया गया है। पुर्ति वक्र की रेखा यह स्पष्ट करती है कि वस्तु की पुर्ति मात्रा व कीमत में धनात्मक संबंध पाया जाता है। वस्तु की कीमतें बढ़ने पर उसकी पुर्ति में वृद्धि व कीमतें घटने पर पुर्ति में कमी होती है।

P.T.O.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

संतुलन :-

बाजार संतुलन किसी ऐसे बिंदु पर निर्धारित होता है जहाँ मांग वक्र, पूर्ति वक्र को प्रतिच्छेदित करे। मांग पक्ष से ज्ञात होता है कि वस्तु की सीमांत उपयोगिता उसके मूल्य की उच्चतम सीमा है तथा पूर्ति पक्ष से पता चलता है कि वस्तु की सीमांत लागत उसके मूल्य की निम्नतम सीमा होती है। अतः बाज़ार कीमत का निर्धारण इन्ही दो बिंदुओं के मध्य होता है।

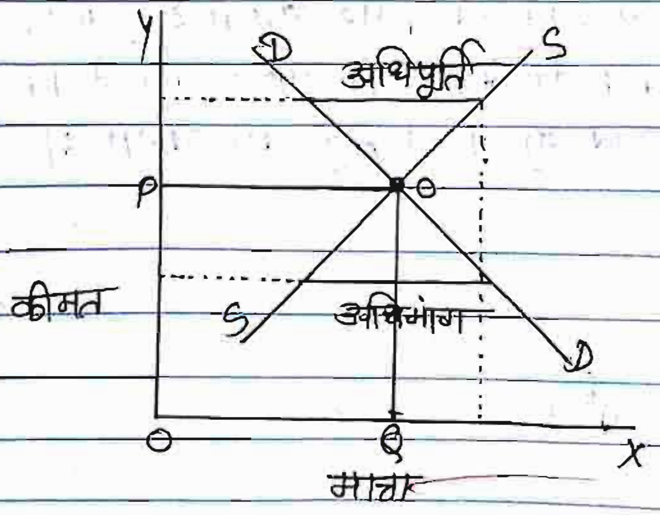

चित्र 1.10 बाजार संतुलन

रेखाचित्र 1.10 में OX अक्ष पर वस्तु की मात्रा व OY अक्ष पर वस्तु की कीमत को दर्शाया है। DD मांग वक्र व SS पूर्ति वक्र जो एक दूसरे को O बिंदु पर प्रतिच्छेद करते हैं तो संतुलित कीमत P तथा संतुलित मात्रा Q निर्धारित होती है। O बिंदु के नीचे किसी भी क्षेत्र में अधिमांग की स्थिति पैदा होती है, परिणामस्वरूप कीमतें बढ़ जाती हैं व संतुलन O पर होता है। O बिंदु के ऊपर के क्षेत्र में अधिपूर्ति की स्थिति उत्पन्न होती है, परिणामस्वरूप कीमतें घटती हैं व संतुलन बिंदु पुनः O प्राप्त होता है।

द्वारा अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

30. व्यापारिक बैंक :- ऐसे बैंक जो जनता से प्रत्यक्ष रूप से उनकी जमाएँ स्वीकार करते हैं, ऋण प्रदान करते हैं तथा अन्य प्रकार की सहायक सेवाएँ उपलब्ध करवाते हैं, व्यापारिक बैंक कहलाते हैं।

2

व्यापारिक बैंक के 4 कार्य :-

(i) जमाएँ स्वीकार करना :- व्यापारिक बैंक, ग्राहकों से उनकी छोटी-छोटी अथवा बड़ी जमाओं को स्वीकार करके उन्हें इन जमाओं पर ब्याज उपलब्ध करवाते हैं। ये बैंक अनेक खातों के माध्यम से जनता की जमाएँ स्वीकार करते हैं जैसे - चालू खाता, बचत खाता, सावधि जमा, मांग जमा आदि।

(ii) ऋण प्रदान करना :- व्यापारिक बैंक आवश्यकता पड़ने पर अपने ग्राहकों को अनेक प्रकार के ऋण उपलब्ध करवाते हैं जिस पर निश्चित दर से ब्याज भी वसूल करते हैं। इन ऋणों में शिक्षा ऋण, विवाह हेतु ऋण, घर बनवाने हेतु ऋण, व्यवसाय प्रारंभ करने हेतु ऋण आदि लिया जाता है।

साथ ही, व्यापारिक बैंक अपने नियमित ग्राहकों को जमा राशि से अधिक राशि निकालने की सुविधा देते हैं जिसे अधिविकर्ष कहा जाता है।

प्रधानमंत्री जन-धन योजना के अंतर्गत 0 राशि पर व्यक्तियों के खाते खोले गये जिसमें नियमित लेनदेन करने वालों को 5000 तक के अधिविकर्ष की सुविधा दी जाती है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iii) साख निर्माण :- → व्यावसायिक बैंकों का प्रमुख कार्य साख-निर्माण करना होता है। ये बैंक जनता से मांग जमा स्वीकार करते हैं जो कि ग्राहक के मांगने पर किसी भी समय चुकानी होती है। बैंक इन जमाओं का एक निश्चित भाग नकद रूप में अपने पास रखकर किसी अन्य ग्राहक को ऋण के रूप में प्रदान कर देते हैं। इस प्रकार प्रत्येक ऋण, जमा को उत्पन्न करता है व प्रत्येक प्रत्येक जमाएँ, ऋणों को जन्म देती है। इस प्रकार बैंक उस जमा ऋण राशि का पुनः कुछ भाग अपने पास रखकर आगे ऋण उपलब्ध करवाता है। इस प्रकार बैंक उधार देकर अपनी प्रारंभिक जमाओं से कई गुना अधिक साख का निर्माण कर लेते हैं।

(iv) अन्य सेवाएँ :- →

(a) लॉकर सुविधा :- → व्यापारिक बैंक अपने ग्राहकों के कीमती जेवरात, गहने, धातुएँ जैसे-सोना, चाँदी आदि को सुरक्षित रखने के लिए लॉकर सुविधा प्रदान करती है।

(b) ATM सुविधा :- → इस सुविधा द्वारा ग्राहक विभिन्न सार्वजनिक स्थलों पर नकद राशि निकाल सकता है तथा हस्तांतरण भी कर सकता है। ATM मशीनें अनेक स्थलों जैसे स्टेशनों, दुकानों आदि स्थान पर लगी होती हैं।

द्वारा क	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iii) इंटरनेट बैंकिंग :- → इस सुविधा के माध्यम से ग्राहक घर बैठे ही अनेक सेवाओं तथा वस्तुएँ आदि प्राप्त करने के बदले अपने बैंक खाते के माध्यम से ही भुगतान कर सकता है। ग्राहक रेल टिकट, हवाई टिकट आदि का भुगतान बैंक खाते द्वारा ही कर सकता है।

(iv) एजेंसी सेवाएँ :- → व्यापारिक बैंक, ग्राहकों को उनके खातों पर क्रेडिट कार्ड व डेबिट कार्ड आदि की सुविधा प्रदान करते हैं जिससे ग्राहक को नकद रखने से छुटकारा मिलता है तथा वे किसी भी समय इन कार्ड्स के द्वारा वस्तुओं व सेवाओं के बदले में भुगतान कर सकते हैं।

इस प्रकार व्यापारिक बैंक ग्राहकों को अनेक प्रकार से लाभान्वित करते हैं।

" समाप्त "